पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

SEMESTER –II

CC-6

TOPIC--- **UNIT- 1**

"IMPACT OF ECONOMIC DEPRESSION IN 1930"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क 9430934482

प्रथम विश्व के पश्चात जो परिस्थितियां पूरे विश्व में उत्पन्न हुई उसने अंततः 1929ईसवी में विश्व आर्थिक संकट को जन्म दिया। इस विश्व

आर्थिक संकट का प्रभाव प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से लगभग सभी देशों पर पड़ा। बेरोजगारी बढ़ी, लोगों की क्रय शक्ति कम होती चली गई, महंगाई बढ़ती चली गई, कल कारखानों में उत्पादन कम होने लगा, इत्यादि। यह संकट 1929 में आरंभ हुई और 1931 में चरम सीमा तक पहुंची तथा इसके प्रभाव 1934 ईसवी तक बना रहा। इन परिस्थितियों का सबसे प्रतिकूल प्रभाव धुरी राष्ट्र विशेषकर जर्मनी में देखने को मिला। इन परिस्थितियों का लाभ कई देशों में विपक्षी दलों और नेताओं ने उठाया और व्यवस्था में परिवर्तन कर अपनी सत्ता वहां स्थापित करने में भी सफल रहे। इसका सबसे अच्छा उदाहरण जर्मनी में हिटलर का उदय एवं इटली में मुसोलिनी की शक्ति के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है।

29 अक्टूबर, 1929 दिन मंगलवार को जब अमेरिकी शेयर बाजार वालस्ट्रीट अचानक काफी गिर गया, तब इसका प्रभाव केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में देखने को मिला । इसने पूरी दुनिया को आर्थिक संकट में धकेल दिया। इस ई- कंटेंट में विश्व आर्थिक

संकट के प्रभाव की व्याख्या की गई है और विभिन्न देशों पर इसके प्रभाव की समीक्षा की गई है।

विश्व आर्थिक संकट ने ना केवल पूरे विश्व में अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में संकट पैदा किया बल्कि इसके प्रभाव राजनीतिक क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। इस आर्थिक संकट से सबसे ज्यादा प्रभावित जर्मनी हुआ था। इस संकट के कारण यहां से आयात निर्यात लगभग बंद हो गए । रूर घाटी, जो कभी औद्योगिक केंद्र हुआ

करता था, अब फ्रांसीसियों के कब्जे में चला गया ।इस संकट के परिणाम स्वरुप जर्मनी की जनसंख्या का लगभग आधा भाग बेरोजगार हो गया । बेरोजगारी की इस समस्या ने भारी सामाजिक समस्याओं को भी जन्म दिया। जर्मनी में जो प्रमुख बैंक था, वह बैंक दिवालिया हो गया। इस संकट ने जर्मनी की तत्कालीन सरकार को जो wrimer Republic कहलाती थी, उस सरकार के समक्ष काफी बड़ी संकट उत्पन्न कर दी। मध्यम वर्ग के अधिकांश युवक इस आर्थिक संकट से निराश होकर विद्रोही बन गया। ब्रूनिग योजना प्रारंभ करके जर्मनी की सरकार ने इस निराश नवयुवकों को सरकारी युवक आंदोलन में संगठित करने की कोशिश की लेकिन यह आंदोलन बहुत कामयाब नहीं हुए और वे लोकतंत्र और जनतंत्र के विरोधी बनते चले गए। इसका प्रभाव जर्मनी की राजनीतिक व्यवस्था में भी देखने को मिलता है।उसे हिटलर ने अपनी ओर आकर्षित किया और अपनी सत्ता स्थापित करने में सफल रहा।

इस आर्थिक संकट ने रूस की साम्यवादी व्यवस्था की सफलताओं को स्पष्ट रूप से पूरे विश्व के सामने रखने का काम किया।1917 ईस्वी में जब रूस में लेनिन की सत्ता स्थापित हुई उस समय से रूस में साम्यवादी व्यवस्था के तहत विकास की एक नई धारा का विकास हुआ। सन 1920 तक यहां प्रतिक्रियावादी शक्तियों को पराजित कर दिया गया और विदेशी फौजों को रूस से बाहर खदेड़ दिया गया । स्टालिन ने अपने शासनकाल में पंचवर्षीय योजनाओं को लागू कर, जमींदारों के दमन तथा औद्योगिक योजनाओं को लागू किया। जिसकी सफलता ने कृषि उत्पादन तथा लोहे के उत्पादन बढ़ा दिया। जब विश्व में आर्थिक संकट का दौर शुरू हुआ तो इसका रूस पर कोई प्रभाव नहीं

पड़ा।इसका औद्योगिक करण चलता रहा। जबकि पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत चलने वाले पश्चिमी देशों में हजारों लोग बेरोजगार हो गए, कल कारखाने बंद हो गए । आर्थिक मंदी का प्रभाव ही साम्यवादी लेखकों के अनुसार इस बात का परिचायक था कि पूंजीवादी व्यवस्था खोखली है और भविष्य में व्यवस्था सफल होगा लेकिन यह अवधारणा हर जगह सही नहीं थी क्योंकि रूस जैसी स्थिति देशों में नहीं थी वहां आर्थिक मंदी का प्रभाव स्पष्ट रूप से साफ साफ देखने को मिल रहा था।

विश्व आर्थिक संकट का प्रभाव फ्रांस में भी देखने को मिला।1920 से 1930 ईस्वी तक फ्रांस यूरोप का सर्वाधिक शक्तिशाली देश प्रतीत होता रहा क्योंकि उसने जर्मनी से प्राप्त होने वाले मुआवजे के बल पर युद्ध से हुई अपनी बर्बादी को लगभग पूरा कर लिया था तथा अपनी रेल प्रणाली को पुनः चालू कर लिया था। यही कारण है कि जब 1930-31 ईस्वी में यूरोप में भारी आर्थिक मंदी एवं आर्थिक विघटन हो रहा था तो फ्रांस उससे अधिक प्रभावित नहीं हुआ। फ्रांसीसी मुद्रा अपनी साख को बनाए रख सकें। इतिहासकारों की राय है कि बैंक की साख इसलिए बनी रही कि फ्रांस के पास इस समय यूरोप में सबसे ज्यादा स्वर्ण भंडार था। 1920 से 1932 तक फ्रांस की सरकार पर मालिकों और उद्योगपतियों का दबदबा बना रहा। लेकिन जब 1933-34 में जब से यूरोपीय देशों की आर्थिक दशा सुधरने लगी तब फ्रांस की बिगड़ने लगी। 1936 ईस्वी में फ्रांसीसी मुद्रा फ्रैंक का अवमूल्यन भी किया गया। आर्थिक संकट के कारण राजनीतिक अस्थिरता बढ़ गई और देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया। लोकतंत्र विरोधी आंदोलन ने अपना सिर उठाया और सड़कों पर हिंसात्मक घटनाएं हुई । जनतंत्र

विरोधी शक्तियों द्वारा लाए गए खतरे का सामना करने के लिए 1936 में सोशलिस्ट रेडिकल सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टियों की मिली जुली सरकार बनी।यह पॉपुलर फ्रंट सरकार के नाम से जानी जाती है। यह सरकार 2 वर्षों तक सत्ता में रही। इस अवधि में फ्रांस में अनेक महत्वपूर्ण सुधार किए गए।

विश्व आर्थिक संकट जो अमेरिका से ही शुरू हुई थी, इसका दुष्प्रभाव अमेरिका में भी देखने को मिला। यहां बेरोजगारों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। 1500000 से बढ़कर बेरोजगारों की संख्या 13000000 पहुंच गई ।यूरोप में आर्थिक मंदी के कारण अमेरिका का यूरोपीय ऋण डूबने की स्थिति में आ गई ।1932 के चुनाव में आर्थिक संकट के कारण सत्ता परिवर्तन हुआ और रिपब्लिकन पार्टी वहां पराजित हुई। रिपब्लिकन पार्टी के स्थान पर डेमोक्रेटिक पार्टी सत्ता में आई।डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार रुजवेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति बने। उसके सत्ता में आने का एक प्रमुख कारण आर्थिक संकट को भी माना जाता है क्योंकि उन्होंने आर्थिक सुधार कार्यक्रम की विस्तृत रूप से घोषणा की थी। आर्थिक मंदी से उबरने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने न्यू डील की घोषणा की ।न्यू डील के उद्देश्यों के बारे में संक्षिप्त रूप से उन्होंने बताया की हम अपनी अर्थव्यवस्था द्वारा कृषि और उद्योगों में संतुलन लाना चाहते हैं। हम मजदूरी करने वालों, रोजगार देने वालों और उपभोक्ताओं के बीच संतुलन कायम करना चाहते हैं। हमारा यही उद्देश्य है कि हमारे आंतरिक बाजार मजबूत और विशाल बने रहें और अन्य देशों के साथ हमारा व्यापार बढ़े। रुजवेल्ट की न्यू डील से अमेरिकी अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार हुए। औद्योगिक एवं

कृषि उत्पादन में वृद्धि होने लगी । न्यूनतम मजदूरी दर और अधिकतम काम के घंटे निश्चित किए गए। इस प्रकार धीरे-धीरे आर्थिक मंदी से उबरने की ओर अमेरिका अग्रसर हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति के द्वारा सच्ची निष्ठा से किए गए कार्यो के कारण अमेरिका पुनः एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर सामने आया।

विश्व आर्थिक संकट का प्रभाव इंग्लैंड में भी देखने को मिलता है। इस संकट के कारण इंग्लैंड में कई कल कारखाने बंद होने की स्थिति में आ गए। बेरोजगारी बढ़ती जा रही थी।जहा 1920 में बेरोजगार लगभग 20 लाख थे वहीं 1932 में बढ़कर 37.5 हो गए। युद्ध के दौरान इंग्लैंड ने काफी कर्ज लिया था,जिसको वह भुगतान करने की स्थिति में नहीं था। युद्ध काल में मजदूरी काफी बढ़ गई थी। युद्ध के बाद जब उनके वेतन कम करने का निर्णय लिया गया तब उनमें असंतोष फैलता गया। जिसका लाभ लेबर पार्टी को मिला।1923 में लेबर पार्टी ने सरकार भी बना ली परन्तु वह बहुत दिनों तक नहीं चल पाई। सरकार ने बेरोजगारी भत्ता देकर लोगो को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया लेकिन इसमें उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिली।इस संकट के कारण इंग्लैंड का 1929-30 के बजट में भी अनिशिचतता देखने को मिलती हैं। इसी आर्थिक संकट ने 1930 में लेबर पार्टी को सत्ता से बाहर कर दिया।1931 में इंग्लैंड में राष्ट्रीय सरकार बनी जिसमें कंजरवेटिव,लेबर और लिबरल तीनों पार्टी शामिल हुई। यहां भी जर्मनी और इटली की तरह फासिस्ट शक्ति का उदय हुए लेकिन उसका कोई विशेष असर यहां देखने को नहीं मिला।

विश्व आर्थिक संकट का प्रभाव ना केवल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में देखने को मिला बल्कि इसका दुष्परिणाम राजनीतिक क्षेत्रों में भी देखने को मिला। इस संकट का लाभ उठाकर जर्मनी में हिटलर जैसे तानाशाह का उदय हुआ । इससे पहले तक हिटलर एवं उसके पार्टी की राजनीतिक शक्ति काफी कम थी परंतु इस संकट से जर्मनी में जो विषम परिस्थिति उत्पन्न हुई, उससे नाजी पार्टी को सत्ता में आने का मौका मिला । उसने जर्मन जनता को क्षतिपूर्ति के रूप में दी जाने वाली राशि के प्रति सचेत किया। जब जर्मनी में दिनोंदिन बेरोजगारी बढ़ती जा रही थी तभी हिटलर उन बेरोजगारों को रोजगार देने का झूठा आश्वासन देकर उसे अपने पक्ष में कर लिया और अंतत: सत्ता में आने में सफल रहा । इसी तरह जनता का ध्यान हटाने के लिए बिभिन्न देशों ने साम्राज्यवादी नीतियों को अपनाया। जिसकी शुरुआत जापान ने 1931 में चीन के मंचूरिया पर आक्रमण करके किया। कालांतर के वर्षों में जर्मनी और इटली ने भी व्यापारिक विस्तार के बजाय राज्य विस्तार पर अधिक ध्यान देने लगा जिसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में सामने आया।

इस तरह विश्व आर्थिक संकट का प्रभाव ना केवल आर्थिक क्षेत्रों में देखने को मिला बल्कि राजनीतिक क्षेत्रों में भी इसका परिणाम काफी हानिकारक हुआ ।कई देशों ने संरक्षण वादी नीति को अपनाया जिसका प्रभाव व्यापार - वाणिज्य पर भी प्रभाव पड़ा। इन सभी प्रश्नों से विभिन्न देशों में जो प्रतिद्वंदिता उत्पन्न हुई उसने अंतत: द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया।